Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 13 अंक 12 | 30 दिसम्बर, 2014 | मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

धर्म का फंडा –बाबाओं का धंधा

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

कभी भारत विश्व का अध्यात्मिक गुरू शिक्षा का ज्योतिपुंज, आधुनिक सर्जरी के जनक ऋषि सुश्रुत का देश और सोने की चिड़िया कहलाता था। यहां ऋषि आश्रमों में राजा और रंक एक साथ बैठकर, एक जैसी वेशभुषा में एक जैसा भोजन तथा एक जैसी शिक्षा गहण करते थे। उन्हे शस्त्र और शास्त्र के साथ-साथ चिकित्सा का भी पूर्ण ज्ञान दिया जाता था। चारों वेद इसके साक्षी हैं। इसी लिए बाद में तक्षशिला और नालंदा जैसे विद्या पुंज विश्व विद्यालय बने और बनारस विश्वविद्यालय तो आज भी कायम है।

आज उसी भारत में पूरी गणना करना तो शायद मुश्किल है लेकिन केवल पंजाब और हरियाणा में २२ हजार पोंगापंथियों के डेरे हैं, जिनका धर्म, ज्ञान या अध्यात्म से शायद ही कोई लेना-देना हो, वे केवल अर्थ उपार्जन के स्त्रोत हैं। मामूली डेरा भी १२०० से १४०० करोड़ के सरमाए का मालिक कुछ वर्षों में ही बन जाता है। इन डेरों में धर्म या अध्यात्म नहीं बल्कि धर्म के नाम पर नफरत के बीज बोए जाते हैं जिसके ताजा उदाहरण बापू आसाराम और संत रामपाल जग जाहिर हैं। बहुत से डेरे व्याभीचारी, नशाखोरी, तश्करी तथा हथियारों के जखीरे और शस्त्र प्रशिक्षण के केंद्र बने हुए हैं।

विडंबना है कि हमारे धार्मिक केंद्रों पर इतनी लूट-खसूट हो चुकी है कि समाज विकृत हो गया है और वे शांति के लिए भटकाव में आए ऐसे पोंगापंथियों के काबू आ गए और इन्होने भी इसी मजबूरी का भरपूर लाभ उठाया। आज धर्म एक धंधा बन चुका है और धर्म में राजनीति की भी पूरी पैंठ है। यह धंधा चमकता है और दोनों का हित साधक बनता है। आज हर गली-कूचे में एक स्वंय-भू भगवान मिलता है जो कुछ टोटके सीखकर प्रचारक, साधक, धर्मगुरू बन बैठता है। बापू आसाराम एक तांगा चालक से अरबों-खरबों का मालिक बन गया और उसके अड्डे व्याभिचार के केंद्र। उसका बेटा भी उसके साथ मिला और भगवान कृष्ण का रूप धर गोपियों संग रास लीला रचाने लगा। बाप-बेटे ने आकूत संपदा एकत्रित की। हर सत्संग पर आयोजकों से लाखों रूपये नकद लेने के बाद वह अपने स्टाल भी लगाते जिन पर धूप-अगरबत्ती, ऐनक, घड़ी, प्रचार सामग्री, कैसट सब कुछ बापू के नाम पर बेचा जाता और बाप-बेटा राजसी ठाठ के साथ गुजर बसर करने लगे। हर गली कूचे में आश्रमों के नाम पर व्याभिचार के साथ-साथ नशाखोरी, नशों का व्यापार तथा हत्या तक इनके आश्रम में हुई लेकिन अंध विश्वासी भगत उनके आगे ढाल बनकर खड़े हो गए। आखिर कड़ी मशक्कत के बाद ये आज जेल में आराम कर रहे हैं।

संत कबीर का कथन है – ''जिन ढूंढा तिन पाया गहरे पानी पैठ, मैं बपुरा डूबन डरा रहा किनारे बैठ'' एक महान संत होते हुए जिनकी वाणी उच्च धार्मिक ग्रंथों का हिस्सा बनी, स्वयं एक सात्विक जीवन में रहे। उनके नाम से जनता को गुमराह करने वाले सिंचाई विभाग हरियाणा से बर्खास्त कनिष्ठ अभियंता ने संत के नाम का सहारा लिया और सतलोक आश्रम स्थापित कर आर्य समाज से पंगा लिया, हत्या का आरोप लगा, सरकारी संरक्षण में करौंथा आश्रम से निकले और उसी व्यवस्था के भस्मासुर बन बैठे। उच्च न्यायालय से जमानत हासिल कर उसी कानून के भक्षक बन बैठे और बरवाला (हिसार) में एक किले की संरचना कर दी। उसने न्याय की धज्जियां उड़ा दी। राजसी ठाठ वालों की तरह स्वचालित गद्दी, राजसी गाड़ियों का काफ्लिा और हथियारों के जखीरे के साथ-साथ अपनी कमांडो शक्ति तक खड़ी कर ली। यहां भी गौर से देखा जाए तो वोट बैंक की राजनीति ही उसकी साथी बनी।

अभी भी ऐसे पोंगा पंथियों के डेरे खंगालने की जरूरत है। यहां से हर तरह के हथियारों के जखीरे निकलने के अंदाजे हैं। शस्त्र-शास्त्र की शिक्षा ऋषि आश्रमों में भी दी जाती थी लेकिन साथ-साथ अध्यात्मिकता तथा देशभक्ति का जज्बा ठूंस-ठूंस कर भरा जाता था, इसीलिए राजा अपनी रक्षा से पहले प्रजा की रक्षा की सोचता था। प्रजा उसके बच्चों समान थी और उसकी रक्षा उसका धर्म। विडंबना है कि हम अपना इतिहास अंग्रेंज की ऐनक से देखते हैं, यहीं पर हमारी कमजोरी जाहिर है। स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व ओर संग्राम में भी संतों ने अह्म भूमिका निभाई, राजा राम मोहन राय ने समाज सुधार के अनेकों कदम उठाए, सती प्रथा को बंद करने हेतू जनता को सजग किया। इन क्रांतिकारियों का कोई धर्म, मजहब नहीं था बल्कि देश भक्ति ही एक जज्बा था जिसके लिए वे स्वतंत्रता की बलि

शेष पेज–2 पर

जाट लहर पाठकों को नव वर्ष की हार्दिक बधाई,
जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला आपके परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना करता है कि नया साल आपके लिए मंगलमय हो।

'k"k i`t &1

वेदी पर झूल गए, फिर अचानक नफरत की लकीर कैसे और ज़्यों आई। नरेंद्र नाथ दज़ा से स्वामी विवेकानंद बने महापुरूष ने विश्व को एक नई राह प्रशस्त कर दिखाई और भारत का लोहा मनवा दिया। हालांकि इनके गुरू विरजानंद सूरदास थे लेकिन ज्ञान की ज्योति पुंज थे। आर्य समाज ने देश भक्ति तथा स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका के साथ-साथ एक जन ज्ञान की धारा प्रवाहित की। इस पूरे युग को ध्यान से देखें तो इन महापुरूषों ने समाज में एक ज्ञान की लहर ही स्थापित की। ज़्या आज के पोगा पंथी उन महान विभूतियों का अनुसरण करने को तैयार होगें, कदाचित नहीं ज़्योंकि वे तपस्वी और त्यागी थे लेकिन आज स्वादू हैं जिन्हे धन, एयासी, राजसी ठाठ चाहिए, जब वे सब उन्हे आसानी से मिल रहा है फिर वे ज़्यों झोंपड़ियों में फटेहाल गुजर बसर करें।

आजकल हमें ज्ञान ही नहीं होता कि हम ज़्या जानना चाहते हैं और ज्ञान हममें कितना है, उसके लिए गुरू की महज़ा है लेकिन आज गुरूजम पर पोगापंथियों का एकछत्र साम्राज्य है। हमें नकली और असली गुरू की पहचान ही नहीं हो पाती। इसी का लाभ उठाते हुए पोगापंथी अपने साम्राज्य का विस्तार करता है। यहां एक दूसरी विडंबना है कि डेरों पर जन समूह एकत्रित होता है जिसे अध्यात्मिकता की पिपासा है और डेरा चालक उसी से लाभ उठा रहा है। राजनेता इसे वोट बैंक मान कर आता है, डाज़्टर अपनी प्रैज़्टिस चलाने हेतू नतमस्तक होते हैं और धर्म व गुरूभाई के नाम पर लोग उसी के पास जाना शुरू करते हैं। प्रशासक को अपनी मजबूरी वहां ले जाती है ताकि वे राजनेता का कृपा पात्र बना रहे। इस तरह विषबेल की तरह ये डेरे दिन दोगुनी रात चौगुनी तरक्की करते हैं और अपनी सुरक्षा के नाम से अपनी सेनाएं तक खड़ी कर लेते हैं जिन्हे असले के लाईसैंस राजनेता और प्रशासक दिलवाता है। बाद में वहीं उनके लिए सरदर्दी बन जाता है और उस भस्मासुर को काबू करना मुश्किल हो जाता है। जनता की भीड़ भेड़चाल चलती है और शायद यहीं डेराबाद का रहस्य है और यही दर्शन है। वास्तविक गुरू मार्गदर्शक तथा जीवन की धुंध दूर करने में ज्ञान का संचार करता है लेकिन राजनेता यहां भी अपनी बेढंगी चाल से बाज नहीं आता और अपने राजनैतिक लाभ के लिए आए दिन नए शंकराचार्यों का आश्रय लेता है। शुरू में चारों धामों पर शंकराचार्य थे लेकिन आज हर गली कूचे में एक मठाधीश या शंकराचार्य है। यहां गद्दी के लिए हत्याएं तक हुई हैं और वे धर्मगुरू जेल यात्रा पर भी गए। सोचनीय है कि वे धर्मगुरू धर्म की ज़्या सेवा करेगें। इससे वैसे तो कोई भी राजनैतिक दल अछूता नहीं है लेकिन कांग्रेस यहां भी अग्रणीय भूमिका में रही है, जिसका फंडा केवल फाड़ो और राज करो रहा। अब तो यह पार्टी की बजाए खानदानी हो गई है इसमें पैदा हुआ हर बच्चा राजनेता है और वही इस राष्ट्र को बचा सकता है बेशक उसे बोलने की तहजीब हो या ना हो। यही हालात गुरूओं का है, किसी भी मठ में बैठो अपनी धाक जमाओ और अपना पंथ शुरू, अंधविश्वासियों चापलूसों और मतलब प्रसतों की कमी नहीं है। कुछेक सालों में ही सफलता, शोहरत, सीरत और संपदा मिल ही जाएगी। ऐसे गुरू समाज को गुमराह करते हैं और ऐसी क्षति पहुंचा जाते हैं जो कभी पूरी नहीं हो सकती। वे बच्चों, स्त्रीयों का यौन शोषण करते हैं और अपने गुण-ज्ञान में लीन रहते हैं। कुछ गुरू भी खानदानी हैं या किसी गुरू के संपर्क का लाभ उठाते हुए प्रगतियों की सीढ़ियां चढ़ते रहते हैं। उनकी प्रचारित सामग्री में कुछ भी नया नहीं होता बल्कि धर्म ग्रंथों का लाभ उठाकर अपना पर्चा अलग से प्रकाशित, प्रचारित तथा प्रसारित करवाने में कामयाब होते हैं। एक स्वंय भू भगवान के पास अपना जंबो जैट प्लेन तक था और अंत एक सैज़्स बीमारी से हुआ फिर भी वे भगवान थे। एक बाबा ब्रह्मचारी जज़्मू में गन फैक्ट्री का मालिक था। पंजाब के एक बाबा को तो 6 डाज़्टरों ने मृत घोषित किया हुआ है और अब तो न्यायालय ने भी उसके अंतिम संस्कार पर रोक लगा दी है लेकिन वे फ्रीजर में समाधी ले रहे हैं ऐसे अनेकों अंध विश्वासी गाथाएं विद्यमान हैं।

अब तो यही कह सकते हैं - ये कैसा सन्यास रे बाबा, सब कुछ तेरे पास रे बाबा। गुरू धारण करना बूरी बात नही है लेकिन अपना विवेक कायम रहना चाहिए। हमारी धार्मिक पुस्तकें अपना रोल निभाने में सक्षम हैं। याद रखें-'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' फिर यों ही भाई-भाई में लकीर डाल रहा है यह कैसा गुरू है। उसका कौन सा धर्म है, हर धर्म 'वसुदैव कुटंभकम' की उक्ति पर ही काम करता है। यही हमारा विवेक और जीवन दर्शन रहना चाहिए। इसी में समाज का उत्थान और इंसान की भलाई है। इसी से हमारा मोक्ष प्राप्ति का रास्ता प्रशस्त होता है। हमें धर्म, अर्थ और काम को भी बरकरार रखना है ज़्योंकि इसी से संसार चलता है लेकिन इसके गुलाम नहीं बनना है। इसी में जीवनदर्शन है। हमें गुरू चयन में अपना अंकीदा स्पष्ट करना चाहिए कि हम ज़्या चाहते हैं और ज़्यों, लेकिन गुरू और भगवान में अंतर जरूर जाने। गुरू मार्ग दर्शक है और भगवान इस कायनात को चलाने वाला सर्वोपरि है। उसकी बराबरी कोई इंसान, हैवान या शैतान नहीं कर सकता। किसी व्यक्ति या गुरू को भगवान ना माने, उसे मार्ग दर्शक ही रहने दें। गुरू महिमा इसलिए है कि उस पावन शरीर में एक पावन आत्मा का वास है, उसकी ही हमें तलाश है, उसी की पिपासा।

आजकल के कुछेक संत मानवता के नाम पर कलंक है उन्होने नफरत के बीज बोए, लाशों का व्यापार किया, आश्रम में विस्फोटक सामग्री एकत्रित की। आज भगवां वस्त्रधारी ही पूजा जाता है फिर चाहे वे जासूसी में पकड़ा जाए या शिष्य को भगाते हुए। आदि शंकराचार्य ने देश को संगठित रखने के लिए मठों की स्थापना की । सिकंदर महान कहलाया लेकिन भारत के सन्यासियों के सामने नत-मस्तक होते हुए मुकुट तक न्यौछावर कर दिया। अकबर बादशाह ने मठों आश्रमों को स्वीकारा, राजकोष से अनुदान दिया ताकि मानवता की भलाई हो सके लेकिन आज के रामपाल केवल भस्मासुर की ही भूमिका में रहे। यहां भी एक विडंबना है कि कल तक जिसके आगे जनता नतमस्तक होती रहीं वो महज भेड़चाल थी और सच्चाई उजागर होते ही भक्त ठगा हुआ सा महसुस कर रहा है। इसी से ऐसे संतों को अपने कृत्य का आभास हो जाना चाहिए। ऐसा व्यक्ति सन्यासी कैसे कहला सकता है। आश्रम में हर तरह के भोग विलास का सामान उपलज़्ध है, ए0के047 तक हैं फिर यह महान संत कबीर का आश्रम कैसे। कम से कम ऐसी महान आत्माओं को तो बज़्श दो। आडंबर का जीवन जीते हुए अपने-अपने को ही धोखा देते रहे हैं। ऐसे झूठे सन्यास से किसका लाभ है, यह कैसा अध्यात्म है।

बहुत से आश्रमों में आज भी सत्संग के नाम पर नाच गाने होते हैं। पंकज उधास शायद ऐसे ही किसी आश्रम से आकर कह उठे - ''मुझे आई ना जग से लाज इतना जोर से नाची आज कि घूंघरू टूट गए।'' कभी ऋषि आश्रमों से मानवता के लिए सदाएं उठती थी - आज मुजरे की थाप पर बेशर्मी का नंगा नाच हो रहा है। अज़्सर यह बाबे स्वंय स्टेज पर नाचते हैं और भक्तों को ऐसा करने के लिए उत्साहित करते हैं। इसी अवसर का लाभ लेते हुए रासलीला रचा लेते हैं। ये कैसी भक्ती है, कैसा अध्यात्म है। यह गहन चिंतन का विषय है। आज हमें पुनः मानवता के उद्धार हेतू भगवान कृष्ण अवतार की प्रतीक्षा है जो वे गीता में कह भी चुके हैं कि मानवता उद्धार के लिए वे युग-युग में अवतार लेते हैं। अन्यथा बाबाओं की कमी नहीं, वे तो स्वंय-भू अवतरण करते रहेगें। आज सुबह टी वी खोलो तो अनगिनत बाबे प्रवचन देते हुए मिलेगें जिनमें ना कुछ नया है ना ही अध्यात्म। कोई अनुयायियों को गोल गप्पे खाने को कहता है कोई दवाई बेचता है और

घर के कोने और माता के अंचल में बड़ा अन्तर है। एक शीतल जल का संसार और दूसरा मरुभूमि – प्रेमचंद

किसी सियासी पार्टी का प्रचारक बना घूमता है लेकिन कुछ वर्षों में अकूत संपदा के मालिक बन जाते हैं।

कुछेक आश्रमों की घोषित संपदा का विवरण देखकर अंधभक्त स्वंय वास्तविकता जान सकते हैं। निर्मल बाबा 238 करोड़, ईसाई धर्म गुरू पाल दिनकर जिसे भगवान ने स्वंय भविष्यवाणी करने का उपहार दिया हुआ है, 5000 करोड़, श्री-श्री रवीशंकर 500 करोड़, संत मोरारी बापू का वार्षिक टर्नओवर 350 करोड़, महाऋषि ब्रह्मयोगी 250 करोड़। श्री माता अमृत आन दामाई 17 अरब रूपये, इन्हे हग करने वाली संत कहा जाता है जो आज तक 3 करोड़ लोगों को गले लगा चुकी है। एक केरला की लेखक सरीनी पताथनक ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि उनके आश्रम में 3000 लोगों के ठहरने की व्यवस्था है तथा वहां कई रहस्यमयी मृत्यु हो चुकी हैं। बाबा रामदेव 13 अरब रूपये, गुरमीत राम रहीम सिंह एक समाज सुधारक के ठेकेदार हैं, उनकी 700 एकड़ भूमि, 175 बिस्तर का चिकित्सालय, गैस स्टेशन मार्केट तथा 250 आश्रमों के मालिक की 300 करोड़ रूपये रूपये की संपदा है। इन अपार संपज़ियों के अलावा डेरा सच्चा सौदा प्रमुज़ के ज़िलाफ विभिन्न अपराधिक, ज़लात्कार व महिलाओं कें विरूद्ध यौन शोषण के मुकदमें न्यायालय में विचारधीन है इसके साथ ही इनके ज़िलाफ नवयुवकों व नवयुवतियों को गैरकानूनी तरीके से असला चलाने के प्रशिक्षण देने तथा 400 से अधिक युवकों को नपुंसक बनाने के अपराधिक मुकदमें भी पंजांब व हरियाणा उचन्यायालय में विचारधीन हैं डेरा प्रमुज़ द्वारा 'मैसेंजर ऑफ गॉड' नामक फिल्म भी प्रदशित की जा रही है, जिसका पंजाब व हरियाणा में जनता द्वारा भारी विरोध किया जा रहा हैं। आचार्य बाल कृष्ण बाबा रामदेव के सहायोगी है, 34 कंपनियों के मालिक है तथा उनकी संपदा का वार्षिक टर्न ओवर करीब 95 करोड़ रूपये का है। चंडीगढ में बाबा बालकनाथ के चेले के रूप में विज्यात एक युवा संत के पास लगजरी कार है और वह एक नंबर के लिए सात लाख रूपये खर्च कर चुका है। यह केवल कुछेक बाबाओं की लीला है। ऐसे जाने अनजाने अनगिनत हैं। तथ्य तथा सच्चाई उजागर होने के बावजूद अधंभक्तों की कतारें बढती जा रहीं हैं ज़्योंकि जनता की अध्यात्मिक पिपासा शांत करने हेतू कोई तो चाहिए। कहीं कुंआ तो कहीं खाई। लोग इस दलदल में धसते जाते हैं। हाहाकार तभी होता है जब उक्त संत या साधवी के कृत्य जेल यात्रा हेतू परिपक्व हो जाते हैं जिसके लिए सियासत, जनता और सरकार की इच्छा शक्ति की जरूरत नितांत जरूरी है, जो अज़्सर नहीं हो पाती। हमें सोचना होगा कि समाज की भलाई कैसे हो सकती है और धर्म की रक्षा कैसे हो सकेगी। किसी भी पंथ या बाबा का शरणार्थी बनने से पूर्व हमें अपने विवेक व आत्मज्ञान को स्वंय जगाना होगा वरना धर्म के नाम पर जन मानुष की भावना व विश्वास को आघात पहुंचाने का क्रम ऐसे ही चलता रहेगा। पोगा पंथियों की गाथाएं अभी तक अंतहीन हैं ज़्योंकि उनके लिए एक अच्छा धंधा है, यहां बिना लागत अच्छी खासी आमदन है। अतः आज के आश्रमों व डेरों के उपर निरंतर निगरानी रखने के साथ-साथ इनके संचालकों द्वारा नैतिकता का पालन करने, समाज कल्याण हेतू उज़रदायित्व निभाने और उनको देश के संविधान के प्रति पूर्ण निष्ठावान बनाने की आवश्यकता है।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0 (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

List of Donors for Construction of Building

M/s Foot Wear Park Association, New Delhi		51000.00
M/s SONA, BLW Precision Forging Vill: Begumpur, Gurgaon		30,000.00
Sh. Randhir Singh Gulia	# 1068, Sector 21, Panchkula	11000.00
Sh. Ravinder Singh Punia	# 507, Sector 21, Panchkula	5100.00
Sh. Lajpat Rai, Bansal	# 203, Sector 7, Panchkula.	5100.00
Sh. Sukhbir Singh Malik	# 1452, Sector 39, Chandigarh.	5100.00
Sh. Naresh Dahiya	# 91/3, MDC, Sector 5, Panchkula	5100.00
M/s Mehra Engineering Corporation, New Delhi		5100.00
M/s Starlite Industries Ltd. Delhi		5100.00
M.s Rajdhani Industries Pvt. Ltd., New Delhi		5100.00
M/s Abrol Watches Private Ltd.		5100.00
Sh. T. R. Nandal	# 160/6, Yamuna Vihar, Ponta Sahib, Distt. Sirmaur (HP)	5100.00
Sh. Rakesh Gill	# 922, Sector 25, Panchkula	3100.00
Sh. B.S. Khetarpal,	M/s SVC Electronics Pvt. Ltd. Bahadurgarh	3100.00
Sh. Laxman Phaugat	# 195, NAC, Mani-majra (U.T)	4200.00
Sh. Zora Singh Deshwal	# 621, Amrawati Enclave, Pinjore	2100.00
Sh. Satish Kumar	# 1438, Sector 39, Chandigarh	2100.00
Sh. Sandeep Kumar	# 7, Samar Haj Home Apartment Trisha Society, Sector 20, Panchkula	2100.00
Sh. Rahul Sharma	# 762, Sector 9, Panchkula	2100.00
Sh. Satbir Singh Mor	# 2285, Sector 23, Chandigarh.	2100.00
Sh. Mahavir Phaugat	# 217, Saini Vihar, Baltana (Pb.)	2100.00
Sh. B. S. Gill	# 43, Sector 12-A, Panchkula	2100.00
Sh. M. S. Sehrawat	# 183, NAC Mani-majra	2100.00
Sh. R. K. Malik	# 969, Sector 26, Panchkula.	2100.00
Sh. J. S. Dhillon	# 1330, Sector 21, Panchkula	2100.00
Sh. Manbir Sangwan	# 874, Sector 25, Panchkula	2100.00
Sh. Rajendar Kharb	#3, Golden Enclave, Zirakpur (Pb.)	2100.00
M/s Posh Polymers Pvt. Ltd.		2100.00
M/s Dswal International		2100.00
Sh. Harpal Chaudhary	# 503, Swastic Vihar, Zirakpur (Pb.)	2100.00
Sh. R. R. Sheoran, EIC (Rtd.)	#334, MDC, Sector 4, Panchkula.	2100.00
Sh. Raj Singh Dahiya	# 326, Sector-8, Panchkula	1100.00

मुसिबत बताती है कि हम किस मिट्टी के बने है। – अज्ञात

OUR ELUSIVE GOD FATHER

- R.N. Malik

Form, abode, visibility, identity and persona of God have always been as elusive as God particle in physics. With the advent of scientific knowledge, perception about God has changed with time and generations in all countries and religious faiths. Now the universal belief among the educated class is "There is one and only one God who is the creator and sustainer/savior of the universe. There cannot be separate Gods for Hindus, Muslims, Christians or Buddhists. He is Omnipresent, Omniscient, All Powerful and All Pervading."

Humans have made miraculous discoveries and inventions after the 16th century. But strangely, there has not been an organized or concerted effort by the intelligentsia to unravel the mystery surrounding the identity of God and His creations. There have been great saints/ hermits who devoted their entire lives in meditation. Even they could not provide any satisfactory clue about the existence, form and abode of God. We humans address and worship him as our Revered Father (Parm Pita Parmatama) and benefactor more out of faith than knowledge. We pray and pour our feelings of distress at his alter and get some solace. He is the repository of hope and solace of vast sea of humanity. But young generation of today is not ready to believe that universe was created by Lord Brahma (Prajapati) in one go or Ghandhari could be the mother of 101 sons or Sati Anusuya could engulf the Sun. Likewise westerners do not buy the Adam and Eve story for the development of human progeny.

Let us analyze the issue in rational terms. Every object has its creator.Universe too has its creator in the form of God. But every object is finite in its mass and size while the universe is not. It consists of unknown number of stars and planets moving aimlessly along distinct pathswithin the space which has unending dimensions. It is not physically possible for any object / entity to have unending dimensions but space has. Now, what about the persona of its creator i.e. the God. Obviously he is also infinite in every respect.

In order to understand the total identity and personality of God in true form,we must look at the vastness of His creations first. There isunbelievable strangeness in the composition and existence of celestial bodies.Sun is just one star in the Universe with a diameter of 864000 milesand consists of Hydrogen gasconstantly converting itself into Heliumthrough the process of nuclearfusion. The fusion process generates energy in different wavelengths to reach us in the form of heat & light. But still the sun is not shrinking in its size and nobody knows how long this process will continue. Astronomers predict that the sun being a star will dwarf one day. It is not known where this newly formed Helium gas goes away. Likewise, nine planets revolve round the Sun with varying and unbelievably high speeds at very far off orbits. Nobody can guess how long this process will continue as the sun is not shrinking in its size. Earth moves with a speed of 18.5 miles/sec to complete one revolution round the Sun in 365 days and 5.75 hoursat an orbital distance is 93 million miles. It is a spherical rock with a diameter of 8000 miles, mostly consisting of hard rocks with 70% surface covered with sea of highly brackish water (30 grams /Kg) and with a canopy of air creating an atmospheric pressure of 10.2 meter of water column and revolves round its axis and the Sun simultaneously and its process of formation is unimaginable even to a geological mind. The (another spherical rock of 2100 miles diameter) Moon is also strategically positioned more out of design than incidence to provide moonlight and remove the darkness at night on the earth.Its motion is all the more complex as it orbits round the earth and the sun in two different directions at a time. How our fore fathers could calculate the motion of planets precisely treating earth as a stationary body when there were no telescopes is also a big mystery. All these planetary motions are in prefect synchronization and have been precisely designed according to set mathematical formulae and laws of physics by some super power or God. Now we can predict their periodic motion at any time. More strangely the earth is the only known planet in the whole universe to support the life system and other stars and planets appear to have no function at all and exist without any reason.Looking at these strange facts we sometimes feel as if we are living in an unreal world or seeing a dream in a sound sleep.

Even science does not provide satisfactory answers to all such unbelievable facts. The Big–Bang theory says that an energy egg burst 14 billion years ago and the energy so released converted itself in different forms over the years and finally took the shape of the universe that we see today. This argument is indigestible as there is tremendous application of mind or hand of God in the design,

composition and formation of every object in the Universe. Look at the human body. How intricately it is designed and formed and every part of it works in perfect synergy. Likewise all the living and non- living objects on the Earth have a distinct and wonderful symbiotic and recycling relationship with one another. Energy alone cannot design the composition and symbiotic relationship among various species of the Nature. For example energy alone cannot think that a cow should be created to provide milk or wheat crop to provide foods to human beings. It is the thought process of a very great mind. So there exists some power with a very powerful think tank that has created this universe on scientific lines and now running the show on permanent basis. Theists call this power as God and atheists call it Nature.

The next question agitating the minds of the people is about the form, abode and visibility of God and His relationship with His creations particularly the human beings. People have foggy ideas or notions about these issues and have no definite answers .Bhagvat Gita (a perfect compendium of all religious texts including four Vedas) explains that **"God is not only the creator of the universe but also its sustainer from time immemorial.His abode is called the Param Dham. He is Timeless, Formless and All-powerful. He describes in details the two routes i.e. Bhakti Yoga (leading unblemished, spiritual, righteous, meditational, altruistic life with complete control over lust, rage, temptation and attachment)and Karma Yoga(a call to the duty without desiring fruits for his labor)to reach Him and attain the Moksha**". Bhagvat Gita also talks about transmigration of souls and terms death as the change point for the process. Theoretically this phenomena is not possible. But many people tell about their preceding births and this fact has to be accepted. There comes the question "Can a formless entity create physical bodies? "The answer is yes as electricity, magnetism, gravitational pull and even air are also invisible or formless but great store house of energy.

Bhagat Singh and his colleagues fought against Britishers on the same principle as Arjun against Kauravs. Arjun survived with the help of Lord Krishna while Bhagat Singh and his friends were more or less crucified like Christ. Obviously, they were the most deserving candidates to have vision of God and attain Moksha. We do not know if they attained Moksha or not. Definitely they are remembered even 71 yrs after their deaths. The continuity of their name and fame even 71 yrs after their deaths may be another form of Moksha for them. Likewise there are always unsung heroes who sacrifice their lives at the call of the duty like 11 soldiers who lost their lives in J&K on 5/12/2014. They are equally deserving candidates for the attainment of Moksha. The problem is that those who lead their lives strictly (for example a poor and young widow or a sadhvi)according to the rules detailed in Bhagvat Gita do not come back on Earth to tell us that they could have a vision of God and attain Moksha.

This way we will continue to search or research about the total identity and personality of God and his ways, indefinitely. Will he be ever visible to anybody in his true persona is not known.However there have been strange manifestations of His power sporadically from time to time. For example there was a report in the Tribune in Jan 1964 that a man was about to kill a boy when suddenly a snake appeared and the boy was saved. But incidents like this do not happen all the times. We accept Lord Krishna and Lord Rama as incarnations of God.We are also inclined to respect extra ordinary human beings like GautamBudh,10 Sikh Gurus, Mahatma Gandhi, Bhagat Kabeer or other spiritual leaders, Christ, Nelson Mandela et all as angels because of their supreme sacrifices in various fields. When we read Mahatma Gandhi one feels as if he carried the soul of Gautam Budh or Yudhishter of Mahabharat because he practiced truth, non-violence and simplicity in full measure in his entire life. During his famous Dandi March in 1930,U.S press famously remarked him as "Christ has been reborn in India."

But the most tearing question agitating our minds is," Why we are so unfortunate that we cannotsee our own creator or The God Father (Param Pita Paramtma)in his true form before our eyes at least once in our life time. We always see his creations but not Him – the Creator". This regret will continue till our death as one renownedhistorian said at one such occasion, "My main regret in life is that I could not see my creator and the crass ignorance about His mysterious ways and creationseven after attaining a very high level of education".This seems to be the predicament of all knowledgeable people with metaphysical bent of mind. The keys to solve this mystery seem to lie in deep and insightful study of old religious text and deep meditational process. Intelligentsia needs to take a call to solve this mystery for future generations. This effort will be the true service to the God, the Church and the humanity.

सिद्ध जसनाथ जी के दार्शनिक विचार

jkd!'k l jkgk

सिद्ध जसनाथ जी राजस्थान के महान दार्शनिक संत, विचारक तथा सुधारक थे उन्होंने ईश्वर, सृष्टि संसार, मोक्ष, कर्म, सदाचार, मृत्यु तथा स्वर्ग नरक पर अपने दार्शनिक विचार प्रकट किये है तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु गुरू के निर्देशन तथा नाम सिमरन पर बल दिया है। उन्होंनें निर्गुण और निरांकार ईश्वर की उपासना की विचारधारा पर भी बल दिया है। मानव के सदाचार पालन के लिए उन्होंनें छतीस धर्म नियम भी प्रतिपादित किये है तथा उनकी पालना करना प्रत्येकजसनाथी के लिए आवश्यक माना है। सिद्ध जसनाथ जी ने जहां एक ओर ईश्वर, सृष्टि, मृत्यु, मोक्ष आदि पर अपना दर्शन शास्त्र प्रस्तुत किया है वहीं उन्होने सदाचार, दान, संयम मधुमता, अंहकार तथा अतिथि सत्कार जैसे विषयों पर विचार प्रकट करके समाज के नैतिक स्तर को ऊपर उठाने का प्रयास किया है। इस प्रकार उन्होंने मानव धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझाने के लिए कईं विषयों पर अपने दार्शनिक विचार प्रकट किये हैं। उनके दार्शनिक विचारों के कुछ प्रमुख विषय निम्न प्रकार से हैं।

b'oj dk vfLrRo % श्री देव जसनाथ जी ने रचना सिभूंघडो कोड, गोरखछन्दों तथा सब्द में ईश्वर का पूर्ण वर्णन किया है। जिनके अनुसार लोक कल्याण का बीज ईश्वर में निहित है। वह सब को देखता है तथा ईश्वर ही सवोच्च तथा परम सत्ता है वह सब के प्रति समान रूप से दयालू है। वह सब के प्रति निष्पक्ष है इसलिए वह न्यायकारी कहलाता है। ईश्वर आकाश, पाताल और दिशा विदिशा सर्वत्र व्याप्त है। सिद्ध जसनाथ जी ने कहा कि ईश्वर की खोज करो, उसी का वर्ण करो, विनय के साथ उसकी प्रार्थना करो तथा ईश्वर को जाने के लिए गुरू का अनुसरण करो। क्योंकि गुरू ही ईश्वर प्राप्ति के रास्ते का दिशा निर्देशक तथा प्रथम द्वार है।

b'oj dh HkfDr o vjk/kuk% सिद्ध जसनाथ जी ने अपनी रचनाओं में ईश्वर की भक्ति करने का आदेश दिया है। जसनाथ साहित्य में ऐसी कई रचनाएं है। जिनके वाचन से भक्ति की पुष्टि होती है। सिद्ध जसनाथ जी ने ईश्वर की अराधना करने पर बहुत जोर दिया है। उन्होनें अपनी रचनाओं में बार–बार आग्रह पूर्वक कहा है कि सभी को परमात्मा की भक्ति करनी चाहिये। भक्ति के प्रभाव से मनुष्य में सदगुणों का विकास होता है भक्ति करने पर भगवान अपने भक्त पर कृपा दृष्टि रखते हैं तथा उसे शान्ति प्रदान करते है सिद्ध जसनाथ जी ने परमात्मा के किसी एक प्रचलित नाम का प्रयोग ना काके उनके विशेषणों से युक्त नामों का उल्लेख किया है इसका कारण है कि जिसकी जिस नाम में श्रद्धा हो, प्रियता हो वह उसी नाम का स्मरण करे इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा है कि परमेश्वर का नाम तो हमेशा लेते रहना चाहिये। ईश्वर का नाम लेने के लिए कोन सा समय ठीक है और कौन सा नहीं, इसका विचार करने की आवश्यकता नहीं है ईश्वर का नाम लेने में सब समय उचित है सिद्ध जसनाथ जी ने कहा है कि अरे प्राणी तू उस परमेश्वर का स्मरण कर जिसने इस सृष्टि की रचना की है तुझे उसी परमात्मा ने मानव तन प्रदान किया है इसलिए परमात्मा का नाम सदैव लेना चाहिये जिसका नाम स्मिरण करने से पापों का नाश होता है तथा सदबुद्धि की प्राप्ति होती है।

lnkpkj dk ikyu% धर्म शास्त्रों में सदाचार की प्रमुखता से प्रशंसा की गयी है सदाचार का अर्थ सत् पुरूषों का आचार है। परोपकार, त्याग, सच्चाई, ईमानदारी, सहनशीलता, उदारता, क्षमा, सरलता, साधुता, नम्रता आदि आचार के अर्न्तगत आते है। जसनाथी–सम्प्रदाय का महत्वपूर्ण तत्व आचार–प्रवणता है। सदाचार ही उसका प्राण है मूलतः जसनाथी सम्प्रदाय आचार प्रधान है। सिद्ध जसनाथ जी ने अपनी रचनाओं में आचार को ही अधिकाधिक प्रतिष्ठित किया है उन्होंने आचार पालन पर बहुत जोर दिया है उनके द्वारा प्रतिपादित छतीस धर्म नियम आचार प्रधान है। आचारवान व्यक्ति की कथनी में और करनी में भेद नहीं होता है आचार से लोक और परलोक दोनों सुधरते है। सदाचार प्रत्येक जसनाथी के लिए पालनीय है श्री जसनाथ जी ने सदाचार से अधिक महत्व किसी बात को नहीं दिया है।

nku % दान का महत्व किसी से छिपा हुआ नहीं है सिद्ध जसनाथ ने अपने धर्म नियमों में दान करने का एक नियम माना है उन्होनें आय का बीसवां हिस्सा परमार्थ कार्य दान में देने का निर्देश दिया है उन्होंने कहा है ''वित सारू ही विसवंन बांटो, काया लागै नी कीडो कांटो'' अर्थात यदि तुम धन के अनुपात से बीसवां हिस्सा दान में व्यय करोगे तो तुम्हारे शरीर पर किसी भी प्रकार का अघात न होगा तुम्हे सांप अथवा कीडा नहीं काटेगा। सिद्ध जसनाथ जी कहा है कि स्वर्ग की इच्छा रखने वालों को दान आदि पुन्य कार्य करने चाहिये मरणोपरान्त यह जीवात्मा यमलोक जाती है वहां उसे अपने कर्मानुसार फल भोगना पड़ता है इसलिए मनुष्य को अपना लोक और परलोक सुधारने के लिए दान के महत्व को समझना चाहिये तथा अपनी आय का कुछ भाग परमार्थ कार्यों में अवश्य लगाना चाहिये।

l;e o e/kj ck.kh % सिद्ध जसनाथ जी ने सयंम रखने व मन आदि इन्द्रियों को वश में रखने को कहा है अर्थात काम, क्रोधादि पाचों बैलो को नाथ कर रखो उन का दमन करो गुरू के आदेशानुसार परमार्थ के कार्य करते हुए तन और मन को वश में रखो। उन्होंने मधुर बोलने पर बहुत जोर दिया है। उनका कहना है जो मुनष्य मन से धैर्यवान है तथा तन से सत्यचरण करने वाला है वह सही अर्थ में मानव धर्मी है।

Hkk"k.k] fuUnk o okn fookn% सिद्ध जसनाथ जी ने सत्य बोलने के लिए कहा है उन्होंनें मिथ्या भाषण को अत्यन्त निन्दनीय ठहराया है उनका कहना है किसी की भी निन्दा नहीं करनी चाहिये निन्दा करना बहुत बड़ी बुराई है सिद्ध जसनाथ जी ने अपने छतीस धर्म नियमों में निन्दा करने व वाद विवाद करने को बुरा बताया है।

vgdkj% सिद्ध जसनाथ जी ने अंहकार, अभिमान तथा दंभ को बहुत बुरा बतलाया है उनका कहना है अभिमान किसी का नहीं चलता एक ना एक दिन अभिमान टूटता ही है ओर तब अभिमानी अंहकारी बहुत ही अपमानित होता है उनका कहना था चकवे ओर चकवी नाम के पक्षियों ने अभिमान किया तो उन्हें रात्रि वियोग का दुःख भोगना पड़ा, रत्नाकर समुद्र ने अभिमान किया तो उसका पानी खारा हो गया, बाग बगीचों में चहकने वाली कोयल ने अभिमान किया तो उसका रंग काला हो गया इसी प्रकार लकांपति रावण ने अभिमान किया तो उसका राष्ट्र नष्ट हो गया। इसलिए अंहकार मानव के लिए विषवेल की तरह है जो उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समाप्त कर देती है।

vfrfFk lRdkj % हमारी संस्कृति में अतिति सत्कार का बहुत बड़ा महत्व है। सिद्ध जसनाथ जी ने अपने द्वारा प्रति पादित छतीस धर्म नियमों में अतिथि सत्कार को एक धर्म माना है। वह अतिथि जिसके आने की कोई तिथि निश्चित नहीं है और ना ही उसके आने की कोई

आंसू पुरुष को नही, स्त्रियों को शोभा देते है। – प्लेटों

पूर्व सूचना है। उसके घर आने पर उसका पूर्ण सत्कार तथा सम्मान करना चाहिये यदि समय–असमय आये अतिथि को मानव दुत्कार दे, उसे भोजन पानी ना करवाये तथा रहने के लिए आश्रय ना दे तो भला धर्म कहां से होगा। इसलिये अतिथि को उन्होंनें बहुत ही सम्मानित स्थान दिया है।

Lox vkj ujd % सिद्ध जसनाथ ने जी अपनी रचनाओं में स्वर्ग का वर्णन किया है। जो प्राणी उत्तम कार्य का संपादन करता है। उसे स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है उनका कहना है पुण्य कार्य ही आगे काम आयेगा। अतः जीवनत्मा को एकाग्र करके पुण्य कार्य का संपादन करना चाहिये। सुकृत्य ही स्वर्ग प्राप्ति का हेतु है जो स्वर्ग प्राप्ति में परम सुख का कारण है। सिद्ध जसनाथ जी ने अपनी रचनाओं में नर्क का बड़ा ही भयानक वर्णन किया है। नरक लोक में पापियों को दण्ड देने के लिए अंगारों जैसे थम्बे है। जिनके बीच पापियों को निकाला जाता है उनका कहना है नरक में यमराज एक–एक कण का हिसाब मांगेगा वहां यदि मानव अपने सुकर्मों का विवरण न दे पायेगा तो बचाव असंम्भव है।

eR; % सिद्ध जसनाथ जी ने मृत्यु से न डरने का आदेश दिया है। ''मरणै सूं नर क्या डरना, मरणा जुग संसारू'' अर्थात हे नर। मृत्यु से कैसे भय, संसार में जो आया है– जिसने शरीर धारण किया है उसे तो एक दिन मरना ही पडेगा तब उससे डरना कैसा। वे कहते है मृत्यु छोटे और बड़े के अंतर को नहीं मानती। समय आने पर सब का अंत कर डालती है। प्राणी को सावधान होने के लिए जसनाथ जी ने कहा है कि हे प्राणी मृत्यु को विस्मृत ना करो। प्राणी अपने को मरण धर्मी मानकर कोई गलत कार्य न करे, इसलिए मृत्यु को सदा याद रखना चाहिये। एक दिन सभी को यहां से कूच करना ही है मरने का सबके लिए एक ही मार्ग है जीव ने संसार में आते समय दस महीने लिया होगा पर जाते समय एक पल भर जितना भी समय नहीं लगता है। इस संसार की यही गति है जैसे पीपल के पक्के पते गिर जाते हैं और नये पत्ते उसमें प्रकट होते है, उसी प्रकार मानव शरीर आने पर मृत्यु को प्राप्त होता है और प्राणी का नया जन्म होता रहता है।

fuokZ.k % मानव जीवन का लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना है। मोक्ष प्राप्ति के लिए मानव शरीर ही सफल साधन है। मोक्ष मानव शरीर के माध्यम से सद्गुणों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए मानव शरीर की प्राप्ति के लिए देवगण भी इच्छा रखते है। सिद्ध जसनाथ जी ने निर्वाण–प्राप्ति के लिए मनुष्य को प्रेरित किया है तथा निर्वाण प्राप्ति हेतु छतीस धर्म नियम प्रतिपादित किये है जिनका अनुसरण करके मानव अपने सुकृत्यों से निर्वाण प्राप्त कर सकता है। निर्वाण करना ही मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य है।

इस प्रकार सिद्ध जसनाथ जी ने मानव कल्याण के लिए अपने अध्यात्मिक व दार्शनिक विचार प्रकट किये है। जिनकी विवेचना करके प्रत्येक मनुष्य अपने लोक और परलोक को सुधार सकता है। आज मानव मोह, लालच, अंहकार व स्वार्थ के वशीभूत होकर सदाचार का पूर्णतया पालन नहीं कर रहा है तथा अपने लोक ओर परलोक को कष्टमय बना रहा है इसलिये आज सिद्ध जसनाथ जी की शिक्षाओं के अनुसरण करने की सख्त आवश्यकता है। जिसके लिए नियमों को समस्त विश्व में प्रचार व प्रसार करने के लिए अपना योगदान देना चाहिये। ताकि समस्त मानव समाज सिद्ध जसनाथ जी के उपदेशों से प्रेरित होकर अपना जीवन आनन्दमयी बना सके। यदि हम सिद्ध जसनाथ जी के धर्म नियमों तथा उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन के व्यवहार कार्यों में अपनाकर जीवन जियो तो कोई कारण नहीं है कि हम अपने वर्तमान जीवन को आनन्दमय ना बना सके। यदि हमारा लोक अच्छा होगा तो परलोक अपने आप ही श्रेष्ठ बन जायेगा। इस संसार में हम सभी प्रकार के गलत कार्य विवेकहीन होकर स्वार्थवश बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए करते है। यदि वास्तव में हम अपने बच्चों का भविष्य उज्जवल बनाना चाहते है तो हमें अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देते हुए उन्हें मेहनती बनाना होगा जिसके लिए सर्वप्रथम हमें अपने आपको सुधारना होगा तभी हम बच्चों के सामने आदर्श प्रस्तुत करके उन्हें संस्कारी तथा मेहनती बना पायेंगें। इसलिए प्रत्येक जसनार्थी को चाहिये कि वह सिद्ध जसनाथ जी द्वारा प्रतिपादित 36 धर्म नियमों का पालन करने का हर सम्भव प्रत्यन करें ताकि वह आदर्श जसनार्थी बनकर अपने बच्चों तथा समस्त मानव समाज के लिए प्रेरणादायी बनकर मानव समाज के कल्याण हेतु अपना योगदान दे सके।

Letter of R.N. Malik, Engineer-In-Chief Public Health (Retd.), E-1/5, Arjun Marg, DLF Phase-I, Gurgaon, To, The Editor, Jat Lahar Chandigarh

Dear Sir,

Many attempts have been made by different organizations / individuals to select an all time best World Cricket Eleven consisting out of players, playing since the days of Bradman (1927-28). But so far, no similar efforts has been made to select the best all time Indian Cricket Team consisting out of players playing since the First Test Match in 1932. After lot of research work, I have selected an all time best Indian Cricket Team consisting of following players:

1) Gavaskar (Captain) 2) Sehwag (or Srikant) 3) Rahul Dravid (also Wicket Keeper) 4) Tendulkar 5) Mustaq Ali (or C.K. Naidu) 6) Poly Umrigar (or Vishwanath) 7) Eknath Sonkar (or Vinoo Mankad) 8) Chandra Shekhar 9) Prasanna 10) Amar Singh 11) Kapil Dev.

This will be the strongest possible Indian Cricket Team to defeat the best all time Cricket Teams of Austrailia (1948 team with Macabe and Dennis Lille), West-Indies (1962 team with Vivian Rechard) and England (1948 team with Hammond, Barrington, Truman and Jim Laker).

गढ़ी सांपला से डूमरखां तक

l|j tHkku nfg;k

उड़ते हुए बालू–कण और पतझड़, शोषण और पीड़ा, किसी महानुभाव को शरीर धारण करके नव जागृति का उद्घोष करती है। विश्व के सभी बड़े चिंतक, उध्यदारक और नेता इन्हीं परिस्थितियों के संधात से पैदा हुए हैं। ऐसी ही मूक–बधिर परिस्थितियों में सृष्टि के अग्रणी भारत के इतिहास के पन्नों में हरियाणा की पावन धारा से एक ऐसा मसीहा उत्पन्न हुआ, जो दधीचि की हड्डियों से निर्मित था, जिसकी ध मनियों में रक्त नहीं वरन किसान के ह्रद्य की पीड़ा प्रवाहित थी, जिसके शरीर में अपनी दुखित, दलित एवं पीड़ित मिट्टी की वाणी आत्मसात् थी। उस मसीहा ने प्रथम बार प्रेमचंद के होरी, गोबर और धनिया की पीड़ा का अनुभव किया, मगर मात्र थोथे आश्वासनों के अनुलेप में विश्वास नहीं किया। वह इस सारी पीड़ा को अपने ह्रदय में संजोय एक क्रान्तिदूत बन गया, जिसके मात्र एक बार आह्वान करने पर 'राबड़ी' और 'खिचड़ी' से सने हाथों वाला किसान हाथ धोकर उठ खड़ा हुआ और और करने लगा अपने भविष्य का निर्माण। वह मसीहा था– चौधरी छोटूराम जो गढ़ी सांपला गांव में 1881 में अवतरित हुआ।

गतिमान, मतिमान विद्वान चौधरी छोटूराम जैसे महान व्यक्तित्व ने सदियों से कराह रही किसान कौम की पीड़ा को अपनी समष्टिवादी अन्तश्चेतना में अनुभव किया और श्रीकृष्ण सहश उपदेश से किसान को कर्मरत होने के लिए प्रेरित किया। यह प्रेरणा कुरूक्षेत्र के महाभारत के लिए नहीं बल्कि किसान की चहुंमुखी उन्नति के लिए थी। उनकी कृति 'बेचारा जंमीदार' किसान की वेदना वर्णन करती है व जनइतिहास को सृजित करती है। राष्ट्रीय दस्तावेज बन चुकी इस पुस्तक के द्वितीय भाग के तृतीय अध्याय में चौधरी छोटूराम ने अर्जुन रूपी सुप्र एवं अकर्मण्य किसान को इन शब्दों में आह्वान किया है– ''किसान! तू सिर से पैर तक आवाज बन जा। अपने अन्दर नदी का शोर उत्पन्न कर। समुद्र का ज्वारभाटा बन। सिंह की दहाड़सीख। नीचे मतदेख, यह पाप है, कायरता है, ऊपर आसमान की ओर देख। पृथ्वी पर विचरण करने वाला मुर्गा मत बन ऊपर उड़ने वाला बाज बन। तेरे पांव जमीं पर टिके हो, पर नजर सातवें आसमान पर है।'' किसान को कर्म से जूझने की सलाह देते हुए उन्होंने आगे कहा है। मैं तुझे अशांति का पाठ पढ़ाना चाहता हूं क्योंकि जो कुछ है हलचल में है, गतिशीलता में हैं। शांति मृत्यु है। शांति तो शमशान घाट में हो सकती है बस्ती मे कैसे? शांति तुझे प्रगति का मार्ग दिखाएगी ताकि तू आन्दोलन का रास्ता अपना सके। तुझे आज संतोष के उपदेश की आवश्यकता नहीं, असंताष की आश्यकता है क्योंकि शांति एवं संतोष दोनों पुरूषार्थ के शत्रु है और तुझे मैं कर्मों से जूझता देखना चाहता हूं।''

गांधी जी और चौधरी छोटूराम समकालीन थे एवं समान विचारधारा से आगे बढ़ रहे थे। दोनों भारत जैसे कृषि – प्रधान देश की उन्नति, गांवों के उत्थान द्वारा संभव मानते थे। जब तक किसान को उसका प्रेम और श्रेय नहीं मिलता तब तक भारत प्रगति की रफ्तार नहीं पकड़ सकता। अतः चौधरी साहब किसान को उन्नति की चरम सीमा पर पंहुचने हेतू कृत संकल्पित थे और इसके लिए उनको राजनैतिक, वैचारिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्रान्ति के सिवाय और कोई विकल्प नहीं दिखाई दे रहा था।

गांधी जी के ग्राम–स्वराज्य तथा चौधरी छोटूराम के देव ग्राम अथवा किसान गणराज्य यानी किसान खुशहाली की सोच एक ही थी अतएवं चौधरी छोटूराम गांधी जी के सहयोगी बनकर 1916 में कांग्रेस में आकर रोहतक जिला कांग्रेस के अध्यक्ष के कार्यरत होकर अपने गन्तव्य की और अग्रसर हुये। गांधी जी पहले राजनैतिक स्वाधीनता फिर किसान आर्थिक स्वतंत्रता में विश्वास रखते थे, परंतु चौधरी साहब किसान आर्थिक स्वतंत्रता को प्राथमिकता देते थे वे इसके लिये राजनैतिक स्वाधीनता की प्रतिक्षा नहीं करना चाहते थे। इस बुनियादी विचारधारा के फर्क के कारण चौधरी साहब कांग्रेस की विचारधारा के साथ अधिक देर तक न चल पाये और वें 1920 में कांगेस से अलग हो गये। उन्होंने 1923 में असली भारत यानी ग्रामीण भारत की खुशहाली हेतू यूनियनिस्ट पार्टी जो जमींदार पार्टी से लोकप्रिय बनी गठीत की। सर्वजनहिताय का आह्वान करके उन्होंने मस्जिद के मुल्ला, गुरूद्वारे के ग्रन्थी, चर्च के पादरी व मन्दिर के पूजारी को जोड़कर अपनी पार्टी के धर्मनिरपेक्ष चरित्र को उजागर किया। उन्होंने उद्घोष किया– ''जो अन्न पैदा करे और रात को वह भूखा सो जाये, इस मानवीय ट्रैजडी को हमें समाप्त करके ही अब दम लेना है।'' इस उद्घोष से सम्पूर्ण पंजाब में एक नई चेतना का प्रवाह हुआ। गुरूद्वारे, मस्जिद, चर्च और मन्दिर में जन अर्चना करके बाहर विशाल मैदानों में जन सैलाब चौधरी छोटूराम की वाणी सुन सुनकर पंजाब में एक क्रान्ति का सूत्रधार बन गया अपने वाजिब हक को पाने का एक पवित्र संकल्प! चौधरी साहब ने फिर जन चेतना के पुरोधा बनकर गामीण के उन्नयन विकास का महायज्ञ शुरू कर दिया। उनके जीवन का चुनौती भरा लक्ष्य था शोषित ग्रामीण समाज को लोकतंत्र के माध्यम से राहत दिलाना। उन्होनें इस लक्ष्य की पूर्ति हेतू आंधियों को ललकारा, डटे रहे, झूके नहीं, अकेले भी पड़ गये पर अविचलित रहे क्योंकि उनके वैचारिक गहनता, स्पष्टता और तटस्थता थी एक उदात्तयोध्या सी।

चौधरी छोटूराम की जमींदारा पार्टी ने पंजाब इतिहास को नया मोड़ दिया। चौधरी छोटूराम ने राजनीति को कर्मवादी

बनाकर किसान कों लोकतंत्र के साथ जोड़कर किसान शक्ति को परिभाषित किया। 1937 में पंजाब विधानसभा के लिए चुनाव हुये। इस चुनाव में सभी पार्टियों – कांग्रेस, मुस्लिम लीग, हिन्दू सभा आदि ने चुनाव प्रचार किया। पंरतु चौधरी छोटूराम की जंमीदारा पार्टी ने चुनाव प्रचार बिल्कुल नहीं किया। पंडित जवाहरलाल भी कांग्रेस के लिए चुनाव प्रचार करने आये। उन्होंने लाहौर में चुनाव सभा को संबोधित किया परन्तु भीड़ बहुत कम। पंडित जी ने इसका कारण जनमानस से जानना चाहा। कांग्रेसियों ने पंडित जी को देश के बड़े नेता के रूप में पेश किया था। जब लोगों से पूछा कि आप पंडित जी जैसे बड़े नेता को क्यों नहीं सुनते। यहां लोगो का कहना था – 'इत्थे तां इक्को बड़े नेता हण ओ हैंगें – चौधरी छोटूराम।' चौधरी छोटूराम की जंमीदारा पार्टी को 175 सीटों में से 101 सीट मिली, कांग्रेस को 20 हिन्दू महासभा को 5 तथा मुस्लिम लीग को सिर्फ 2 सीटें मिली। पंडित जवाहरलाल चौधरी छोटूराम के प्रभाव व लोकप्रियता से काफी विचलित हुये और किसान शक्ति उन्हें जीवन पर्यन्त भयभीत करती रही।

चौधरी छोटूराम ने लोकतंत्र व्यवस्था द्वारा पंजाब में किसान राज की संरचना की। उन्होंने विधान सभा में स्वयं लगभग 35 कानून बनवाकर किसान को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करके रक्तहीन क्रान्ति लाई। यह विश्व की एकमात्र क्रान्ति थी जिसने ग्रामीणों को शोषण मुक्ति दिलाकर मानव इतिहास का नया अध्याय लिखा। चौधरी छोटूराम वास्तव में राजनीतिज्ञ नहीं, राजनैतिक चिंतन थे। उनकी दृष्टि में लोकतंत्र का अर्थ समाज तंत्र था और इसलिए उन्होंने मानव को दयनीय स्थिति से निकालकर अपने मिशन को संपूर्ण किया। उनका व्यक्तित्व बहुप्रंशनीय, बहुचर्चित, बहुआलोचित एवं अत्यन्त विवादास्पद रहा। उनको हमसे बिछड़े हुये कोई 69 साल हो गये हैं। उनकी समृति को आजादी के बाद राजनैतिक पार्टियों ने विशेषकर कांग्रेस ने धूमिल करने के भरसक प्रयत्न किये तथा उनकी विचारधारा को विराम लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यदि उनके प्रंशसकों ने उन्हें युग प्रर्वत्तक, निर्भीक, छोटा राम आदि अंलकारों से अलंकृत किया तो उनके आलोचकों ने उसे छोटाखां व शहरी विरोधी कहकर कोसा।

राजनीति के समीक्षकों का मानना है कि चौधरी छोटूराम मानव को सर्वोपरी महत्व देते थे। उनकी राजनीति अशिक्षिता, अभागों, शोषितों एवं भोली भाली जनता के लिए थी। वे उनके लिए जीयें और उनके लिये ही परलोक सिधारे। उनकी राजनीति का साफ मतलब था कि जिनके हक मारे गये हैं, वे उन्हें मिले, जिनका शोषण हो रहा है वे शोषण मुक्त हो, और जो अर्थ के कारण पिछड़े हुये हैं, उन्हें उनसे मुक्त कराया जाये तथा नव जीवनीय मूल्यों के प्रति उनमें आस्था पैदा की जाए। इसलिए इस महान विभूति की विचारधारा का अब सधन अध्ययन होना नितान्त आवश्यक है। छोटूवाद एक जनप्रक्रिया है जिसमें निरन्तरता रहनी चाहिये। उनकी विचारधारा पर मनन न होना एक दूखद एवं आश्चार्यजनक बात है। क्यों न उनकी स्मृति में एक वार्षिक व्याख्या नमाला शुरू हो। आजादी के बाद किसानों को चौधरी छोटूराम जैसे प्रभावी नेता का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ जिसके कारण किसान उसी दयनीय स्थिति की और चला गया है जहां से चौधरी छोटूराम ने उन्हें निकाला था। इसलिए किसान छोटूराम के वारिस की तलाश में रहा। चौधरी छोटूराम ने अपने किसान शोषण मुक्ति मिशन की शुरूआत 1914 में की थी। आज इसे 100 वर्ष हो गये हैं। कहते हैं इतिहास की पुन्रावर्ती होती है। चौ. छोटूराम के मिशन के इस शताब्दी वर्ष में किसान चौधरी बिरेन्द्र सिंह जो अब केन्द्र में ग्रामीण विकास व पंचायत राज कैबिनेट मंत्री हैं, छोटूराम के वारिस के रूप में सम्मान दे रहें हैं। यद्यपि चौधरी बीरेन्द्र सिंह ने अपने नाना की विचारधारा को जीवित करने हेतू 'छोटूराम विचार मंच' का गठन किया था परन्तु वे कांग्रेस में होने के कारण इसे सक्रिय कर पायें। वे कांग्रेस में 42 साल तक जुड़े रहे जहां उन्हें जन सेवा करने का कोई अवसर नहीं मिल पाया और वे वहां मीडिया की परिभाषा में ट्रजेडी किंग बनकर ही रह गये।

25 मार्च, 1946 को ड्मरखां में जन्में चौ. बिरेन्द्र सिंह को अब अपने नाना की विचारधारा को पनपने का एकभव्य अवसर मिला है। निःसंदेह उनका भी राजनैतिक जीवन चौ. छोटूराम की भांति अति संघर्ष पूर्ण रहा है और जिस तरह उनके नाना ने सभी अवरोधों को लांघ कर किसान क्रान्ति का श्रीगणेश किया उसी प्रकार वे भी आज भी किसान के संकटों का निवारण करने का दृढ़ संकल्प लेगें। गढ़ी सांपला की विरासत को संभालने तथा इसे आगे बढ़ाने का दायित्व अब डूमरखां में आ गया है। चौधरी बीरेन्द्र सिंह की धमनियों में चौधरी छोटूराम को रक्त प्रवाहित कर रहा है अतएवं वे आज एक ऐसी मशाल बने जिसके प्रकाश प्रभाव से किसानों को प्रगति पथ पर चलने का बल मिले। किसान अपने काम से, अपने व्यवहार से और अपने स्वभाव से भोलेपन की तस्वीर है। जीवन के थपड़ो ने, ऐतिहासिक घ्टनाओं के चक्र ने भिन्न–भिन्न हकूमतों के कानूनों ने, समाज के प्रबन्धों ने, राजनीतिक विचारों के बहाव की दिशा ने और आर्थिक शक्तियों के प्रभाव ने किसान को, आज बेजान मूर्ति बना दिया है। इस बेजान मूर्ति को गतिशील बनाने का ऐतिहासिक अवसर चौधरी बीरेन्द्र सिंह को दिया है। चौधरी छोटूराम की बातें किसानों ने सुनी, समझी और अपनाई जिससे किसान ने अपने जीवन में नए सूरज का उदय होते देखा। चौधरी बीरेन्द्र सिंह का भी आज किसान अनुसरण करेगा और उन्हें छोटूराम द्वितीय के रूप में इतिहास के पन्नों में सुशोभित करेगा। इसके लिए चौधरी बीरेन्द्र सिंह को किसान विकास की इबारत तो लिखनी ही होगी। जब 9 नवम्बर, 2014 को चौधरी बीरेन्द्र सिंह ने केन्द्रीय कैबनिट मंत्री के रूप में शपथ ली तो झाडसा के छोटूराम भवन में बैठे एक सम्पंत्र किसान की प्रतिक्रिया थी– ''बहुत देर कर दी, चौधरी बीरेन्द्र सिंह जी, आते, आते।'' खैर, देर आयद–दुरस्त आयद।

वेदों का प्रकाश फैलाने वाले ज्योति पुत्र महर्षि दयानन्द

&vf[kys'k vk;Un

''ईश्वर एक है और सृष्टि में वही विराजमान है। उसे मानने वाले अलग–अलग नामों से उसे पुकारते हैं। कोई नया धर्म या संप्रदाय स्थापित करने की मेरी योजना नहीं है। मेरी आत्मा का एक ही लक्ष्य है – सच में विश्वास और दूसरों को इसमें विश्वास करने में सहायता करना।'' महर्षि दयानन्द के ये विचार उनके पूरे व्यक्तित्व का अवलोकन करने में सहायक हैं। समाज सुधारक, विचारक, लेखन और देश स्वामी दयानंद सरस्वती का जनम उस काल में हुआ था, जब देश में ब्रिटिश राज था और देश दरिद्रता से त्रस्त था। समाज दिशा विहिन था और धर्म अंधविश्वासों का पर्याय बन गया था। 1824 में मौरवी राज्य के टंकरा कस्बे में गुजराती ब्राह्मण परिवार में जन्में मूल शंकर को उनके पिता करसन भाई ने हालांकि शैव मत में दक्षित करवाया था, पर शिवरात्रि पर्व की रात ने मूल शंकर को महर्षि स्वामी सरस्वती दयानंद बनने की राह पर अग्रसर कर दिया था।

सच की खोज में वह विभिन मंदिरों और मठों में भटकते रहे। उनकी आत्मा अंधकार में भटकती रही। उसे मार्गदर्शन के लिए गुरू चाहिए। गुरू यानी गु (अंधकार) रु (प्रकाश)– अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला। वही सही राह दिखा सकता है, परमज्ञान से साक्षात्कार करा सकता है। कई गुरू मिले, पर कोई भी उनके प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर नहीं दे सका। परमज्ञान की प्राप्ति उन्होंने सन्यासी बनने का निर्णय लिया, पर कोई भी सन्यासी उस युवावस्था में उन्हें सन्यासी बनाने को तैयार नहीं हुआ। अंततः उन्हें नर्मदा के किनारे एक गुरू मिला, जिसने उन्हें दीक्षा दी। यहीं पर मूलशंकर का नाम स्वामी विरजानंद ने वेदों के रहस्य को दयानन्द के समक्ष उड़ेलना शुरू कर दिया, जिसे उन्होंने संपूर्णता में ग्रहण किया।

गुरू ने दयानन्द से कहा, 'प्राचीन समय में वैदिक ज्ञान ने लोगों के मस्तिष्क में उजाला कर रखा था। भारत जगत्गुरू कहलाता था। आज इस देश के लोग अज्ञान, अशिक्षित, अंध विश्वास और अंधकार में डूबे हुए हैं। जाओ दयानन्द, अज्ञान के अंधकार को मिटाओं और वेदों के ज्ञान का चहुं और प्रकाश फैलाओं। यही मेरी गुरूदक्षिणा होगी।' स्वामी दयानन्द ने गुरू वेदों के ज्ञान का उजाला करने की इच्छा को पूरा करने की सौगंध ली और अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए निकल पड़े।

महर्षि दयानन्द ने सदियों से सोई मानवता और वेद संस्कृति एवं धर्म का पुनर्जागरण ही नहीं किया, बल्कि उसके विशुद्ध और अशुद्ध रूप के भेद को भी जनमानस केसामने रखा। समाज, संस्कृति, धर्म और राष्ट्र चेतना से लेकर ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था जिस पर उन्होंने अपनी नजर न दौड़ाई हो। वे दयानन्द ही थे जिन्होंने अपने संकल्प, चरित्रबल, आत्मशक्ति और साधना के जरिए देश और समाज में छाए पाखंड, अंधविश्वास, कुरीतियों, गलत प्रथाओं और पौराणिक तंत्र–मंत्र को पूरी तरह से नष्ट करने का संकल्प लिया और काफी हद तक वे उसमें सफल भी रहे।

देश में पसरे विकट अंधकार और पाखंड को जड़ से खत्म करने के लिए दयानन्द जहां विष पीकर भी एक युगांतकारी योद्धा की तरह मैदान में डटे रहे, वहीं पर अंग्रेजी क्रुर शासन की दमन, शोषण और भयाक्रांत करने वाली नीतियों के खिलाफ भी पूरे मनोयोग से लड़ते रहे। उन्हें महज किसी एक समस्या का सामना नहीं करना पड़ा, बल्कि वे एक साथ अनेकानेक मोर्चो पर संघर्ष करते रहे और जहर का घूंट पीते रहे। महर्षि दयानन्द उस वक्त पैदा हुए थे जब संस्कृति, स्वभाषा, स्वदेशी, स्वधर्म, स्वराष्ट्र, स्वसाधना, स्वजाति और देश स्वाभिमान पर विदेशी आक्रमण चारों तरफ हो रहे थे।

उस समय भारत की आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक दशा बहुत ही खराब थी। पूरा भारतीय समाज पूरी तरह से दिग्भ्रमित और कूपमंडूकता में डूब पतितावस्था को प्राप्त हो रहा था। दरिद्रता और अशिक्षा में सारा देश दूखों के सागर में डूबता जा रहा था ऐसे में महामानव दयानन्द ने अपनी ओजस्विता और प्रचंड ब्रहाचर्य के प्रताप से समाज, देश, संस्कृति, स्वभाषा और स्वधर्म की डूबती नैया को एक निर्भीक नाविक की तरह बड़ी सफाई से बचाने का साहस दिखाया। वह वक्त ऐसा ही था जैसे घनघोर भादों की काली रात में एकाएक प्रचंड सूर्च चमक उठा हो और सारा कुछ क्षण भर में सब स्पष्ट हो गया हो। महर्षि जहां देश के राजा–महाराजाओं को अंग्रेजी पराधीनता और समाज की अत्यंत खस्ताहाल दशा को सुधारने के लिए एक विश्व विजयी योद्धा की तरह डटकर मुकाबला करने में लगे थे वहीं पर किसानों, मजदूरों और स्त्रियों की बिगड़ी हुई दशा को उबारने में लगे हुए थे। 1857 के पहले स्वाधीनता संघर्ष से लेकर महाप्रयाग 1883 तक वह भारत को अंग्रेजी शासन से छुटकारा दिलाने और आजादी के रणबांकुरों को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करने में लगे थे। इसलिए उनके विरोधी महज पौराणिक पोंगापंथी और विभिन्न सम्प्रदायों के महंत ही नहीं थे बल्कि तमाम अंग्रेजों के पिट्ठू देशी राजा और नवाब थे। अंग्रेज तो उनसे इतने सावधान रहते थे कि हर वक्त अपने खुफिया विभाग को उन पर कड़ी नजर रखने के लिए आदेश देते रहते थे। यही वजह थी कि अनेक बार दिए गए जहरों में अंग्रेजों का हाथ होना भी साबित होने लगा है।

स्वामी जी ने सत्य सनातन वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करने की कोशिश की। उन्होंने नारा दिया – वेदों की ओर चलो और कहा कि वेद ही समस्त धर्म का मूल हैं। स्वामी दयानन्द ने वर्ष 1875 में आर्य समाज की स्थापना की, जिसमें वेदों की शिक्षाओं के आधार पर आध्यात्मिक और सामाजिक जागृति का सतत प्रयास आज भी जारी है। ^lR;kFkZ çdk'k* स्वामी दयानन्द जी का मुख्य ग्रंथ है जिसमें उनका संपूर्ण दर्शन झलकता है।

सुंदरता वक्त की रियायत है। – अफलातून

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 24/5'1" B. Tech (Hons) M.Tech (CSE) Final year, Avoid Gotras: Dhariwal, Punia, Khatkhar, Cont.: 09356041518
- SM4 Jat Girl 25/5'2" B.C.A. from Punjab University, MCA from Kurukshetra University Working as Computer Lecturer in Private School. Avoid Gotras: Mor, Chahal, Dhanda, Cont.: 09779134233
- SM4 Jat Girl 27/5'7" M.Sc. (Math) from Punjab University, NET qualified Working as Leturer in DAV College. Avoid Gotras: Baliyan, Tomar. Cont.: 09837735626
- SM4 Jat Girl 24/5'6" M.A.(Psychology) from Punjab University, Working as Lecturer in Higher Secondary School Sector 8, Chandigarh. Avoid Gotras: Pawar, Rathi. Cont.: 09988354208
- SM4 Jat Girl (DOB July,1988)26/5'3" MBA Working as Bank Manager in a Nationalized Bank at Panchkula. Preferred match from Chandigarh, Panchkula, Mohali, Avoid Gotras: Sangwan, Dangi, Doon, not direct Kundu. Cont.: 09988346779
- SM4 Jat Girl 35/5'3" M.A. B.Ed. Avoid Gotras: Sehrawat, Katuwar, Redhu, Cont.: 08059550365
- SM4 Jat Girl 30/5'6" M.A. B.Ed. Avoid Gotras: Sehrawat, Katuwar, Redhu. Cont.: 08059550365, 08393069428
- SM4 Jat Girl 26/5'7.5" Convent Educated B. Tech (Electronics & Comm.) MBA (HR) Working in PSU Bank. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Tokas. Cont.: 08679157130, 09466203446
- SM4 Jat Girl 26/5'3" MCA, MBA Employed as supervisor in Central Govt. on Cont. basis. Avoid Gotras: Bagri, Nehra, Nain, Cont.: 09417415367
- SM4 Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE) Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl 28/5'4" B. Com. (Hons.) C.C.W.A. JIB, CIB Working as Accountant in K. K. Associates Chandigarh. Preferred from Chandigarh, Panchkula, Mohali. Avoid Gotras: Dahiya, Nandal, Doon. Cont.: 09501421574
- SM4 Jat Boy 28/5'8" 10+2, Passed CTI after ITI (Walking problem in one leg) Own business of cable and Earning Rs. 55000-60000 PM. Avoid Gotras: Pannu, Deswal, Chahal. Cont.: 08901432832
- SM4 Jat Boy 29/5'11" Convent Educated B.Sc. BBA Pursuing B. Engineering (AMED) Serving in Indian Navy. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Tokas, Cont.: 08679157130, 09466203446
- SM4 Jat Boy 28/5'10" MBA, NET cleared Employed as Manager in Steel Plant in Jharkhand. Avoid Gotras: Nashier, Gehlayan, Deswal, Cont.: 09813143850
- SM4 Jat Boy 26/6'1" M. Tech. from P.E.C. Chandigarh Pursing MBA from Guru Jambeshwar University, Hisar Employed as SRF in Central Government Organization at Chandigarh. Father Govt. Officer, Own House at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Mann, Dhull. Cont.: 09417869505.

"हमें जिन पर गर्व है"

पंजाब में 6 दिसम्बर से 20 दिसम्बर 2014 तक 5वें वर्ल्ड कब्ड्डी कप चैंपियनशिप हुई जिसमें 6 महाद्वीपों के 14 देशों की 20 टीमों ने हिस्सा लिया। हरियाणा विद्यूत–प्रसारण निगम पंचकूला से सेवा निर्वत हुए सीनियर स्पोर्टस आफिसर श्री राजसिंह दहिया को रैफरी नियुक्त किया गया। हमें इन पर बड़ा गर्व है क्योंकि पिछले साल दिसम्बर 2013 में चौथे विश्व कबड्डी कप में भी बतौर टैक्नीकल आफिसियल की बहुत अच्छे से भूमिका निभाई थी।

श्री राजसिंह दहिया की इस शानदार उपलब्धि पर जाट सभा चण्डीगढ़पंचकुला के समस्त सदस्यगण उनको बार–बार बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते है।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला के आजीवन सदस्य श्री बीरेन्द्र सिंह राना के सुपुत्र श्री नयनदीप ने सी.बी.एल.सी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा में 93 प्रतिशत अंक प्राप्त करके अपने डी.पी. एस. स्कूल सैक्टर 40–सी, का नाम रोशन किया,

इनकी शानदार सफलता पर जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

नीम जैसा हकीम कहाँ

—प्रीतिमा

'करेला और नीम चड़ा' जैसी कहावत को जन्म देने वाला व्यक्ति शायद कभी नीम की छांव तले सुस्ताया नहीं होगा। कभी नीम से गुजरकर आती ठंड़ी-ठंड़ी नशीला बयार ने उसे मदहोश नहीं किया होगा। कभी उसने नीम की गुलाबी मुलायम पत्तियों को मुंह में रखकर चबाया नहीं होगा। नहीं तो वह उस कड़वाहट में घुलती हुई बताशे जैसी मिठास को जरूर अनुभव करते। गुणकारी नीम के बारे में पढ़े यह रोचक लेख।

नदियां किनारे निमिया रोपल उजे अशह–बिशह निमिया पसरल। ताहि तर खाड़ भेल बेटी सुनयना बेटी हे। काहे बेटी तोरा मुखहूं मलिन भेल है। **(एक अंगिता लोकगीत)**

लोकगीतों में नीम, शादी के उबटन में शामिल नीम, ससुराल जाती लड़की की यादों में बसा नीम, विरहा के यादों का साथी नीम, आयुर्वेद में महत्वपूर्ण स्थान रखनेवाला नीम हमारे रोजमार्रा की जिंदगी में बहुत ही उपयोगी माना जाता है। लोक गीतों में इसकी ठंडी छांव की तुलना तो माता–पिता के प्यार से की जाती रही है। जैसा कि इस राजस्थानी लोकगीत में–

'संजा नीमड़ा नी छाया, बसी माता–पिता की माया
माया तोड़नो पड़से कि सासर जाने पड़से...!'

नन्हीं–नन्ही सखियों के संग गोब से लीपे आंगन में बैठकर संजा के गीत गाते हुए नीम कब अपना–सा लगने लगा, पता ही नहीं चला। कड़वे–कसैले नीम पर रचे मीठे भोले अनपढ़ गीत अनजाने ही आज भी जुबान पर थिरक उठते हैं।

निमिया के पात तबहि निकल लागे, जब नीम कौड़ा होय। यानी नीम की ठंडी सुखद छांव होती है बड़ी प्रिय लगती है, वैसी ही माता/पिता की मोह–माया होती है। इस माया को तोड़ना पड़ता है, तोड़ना पड़ेगा, ससुराल जाना पड़ता है, जाना पड़ेगा।

बचपन की ढेर सारी यादों में बसा नीम। स्कूल से लौटते हुए नीम की सूखी पत्तियों को अपी कॉपी के पन्नों पर गिरने की कामना लिए देर तक खड़े रहते सहपाठी, और जैसे ही कोई पत्ती किसी बच्चे की कॉपी पर गिरती मान लेते कि पढ़ाई में इस बार तो वही अव्वल आएगा। सिर्फ अनुभूति के स्तर पर ही नीम अप्रतिम नहीं है, उसकी औषधीय महत्त छाल, टहनी, दातुन, पत्तियां, निबौरिया, फूल इन सबके रूप में प्रकट होती है। तभी तो यादों के किसी आइने की धूल पोंछते हुए निदा फाजली ने लिखा है–

'सुना है अपने गांव में रहा न अब वह नीम
जिसके आगे मांद थे सारे वेद हफीम।'

सच ही है जिस घर में नीम का एक पेड़ है। वहां से बहुत सारी बीमारियां तो अपने–आप दूर हो जाती है। नीम से जुड़े छोटे–छोटे नुस्खे जिन्हें अपनाकर हम महामारियों से काफी हद तक छुटकारा पा सकते हैं।

- गर्मियों में इन्फेक्शन की वजह से त्वचा संबधी परेशानिया ज्यादा होती हैं, जैसे खुजली, खराश आदि। इसके लिए नीम का लेप फायदेमंद रहता है। यह सभी प्रकार के चर्म रोगों के निवारण में सहायक हैं।
- नीम का दातुन करने से आंत और मसूड़े स्वस्थ रहते हैं। नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर उस पानी से नहाने से चर्म विकार दूर होते हैं ये खासतौर से चेचक के उपचार में सहायक हैं और उसके विषाणु को फैलने न देने में सहायक हैं।
- नीम मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों को दूर रखने में अत्यन्त सहायक है। जिस वातावरण में नीम के पेड़ रहते हैं, वहां मलेरिया नहीं फैलता है।
- नीम के द्वारा बनाया गया लेप बालों में लगाने के कई फायदे हैं, बाल स्वस्छ रहते है और कम झड़ते हैं तभी तो इसे संस्कृत में 'अरिष्ट' भी कहा जाता है, जिसका मतलब होता है, 'श्रेष्ठ, पूर्ण और कभी खराब न होने वाला।' अंगिका की ये कहावत भी चैत्र मास में नीम की महत्ता को अच्छी तरह दर्शाती है।

चैतो के नीम बैशाखो के बेल,
जेठ मास पनियौतो ठेल।

We Are Proud of

The below given paragraph contains information about my selection in American Express as an intern and further being offered a permanent job there.

"I Dinaz Malik, a student of Computer Science and Engineering at PEC University of technology was selected from my campus for a 6 month internship at American Express in my 3rd year of Engineering. During these 6 months I was made to work in the American Express Technology field where I managed the banking software of the company. Impressed by my work over this course, the company gave me a "pre-placement offer", which meant that they had now officially hired me as an employee. I will join American Express after my graduation is completed in June, 2015". All the members of Jat Sabha Chandigarh/Panchkula congratulate Dinaz Malik for her grand success and pray to Almighty God for her continuous sublime success and a bright career in all time to come as well.

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।